an>

Title: Need to amend the guidelines for use of medicines meant for treatment of depression.

कुँवर भारतेन्द्र सिंह (बिजनौर)ः मैं सरकार का ध्यान अभी हाल ही में भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई.सी.एम.आर.) के जर्नल में प्रकाशित शोध की तरफ दिलाना चाहता हूँ। इस जर्नल में बताया गया है कि आजकल डॉक्टर मानसिक अवसाद (डिप्रेशन) की दवाओं को सर्दी-जुकाम की दवाओं की तरह मरीजों को लिख रहे हैं और मरीज जल्दी ठीक होने की लालसा में बेफिक्र होकर अवसाद की दवाई खा रहे हैं। देश में अवसाद रोधी दवाओं का सेवन का पैटर्न जानने के लिए देश में पांच मेडिकल संस्थानों के मनोरोग विभागों तथा जापान की कोबे यूनिवर्सिटी ग्रेजुएट स्कूल ऑफ मेडिसिन द्वारा लखनऊ, चंडीगढ़, मुम्बई, तिरूवल्ला तथा गुवाहाटी से मरीजों पर अध्ययन किया गया, तो पाया गया कि जो मरीज अवसाद की दवा खा रहे थे, उनमें से पचास फीसदी ऐसे मरीज थे जिन्हें अवसाद से मिलते-जुलते कोई लक्षण किसी अन्य बीमारी की वजह से थे।

जहां तक मेरी जानकारी है, मानसिक अवसाद के कम से कम नौ महीने का कोर्स करना होता है। अक्सर यह देखा गया है कि नौ महीने अवसाद की दवाएं खाने के बाद ज्यादातर मरीज इन पर निर्भर हो जाते हैं और उन्हें इन दवाइयों की लत भी लग जाती है, क्योंकि कुछ दवाइयों में नशीले पदार्थ भी होते हैं। तब स्थिति और भी बुरी हो जाती है यदि बिना बीमारी के ये दवाएं खाए और बाद में उसे पता चले कि उसे इसकी कोई आवश्यकता ही नहीं थी। मेरा माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री से विनम्र अनुरोध है कि अवसादरोधी दवाओं के इस्तेमाल के लिए बने दिशा-निर्देशों में जल्द से जल्द बदलाव करने का प्रयास करें तथा ऐसे मामलों में ज्यादा से ज्यादा नमूने लेकर शोध पर समुचित ध्यान देने का आदेश जारी करें।